Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies,
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2016 = 6.17, www.srjis.com
UGC Approved Sr. No.45269, JULY-AUG 2017, VOL- 4/35

xk/kh fopkj/kkjk e: ifrfcfcr lkof=d fodkl

0gh- , l- bxG, **Ph. D.**

राज्य”ाास्त्र विभाग प्रमुख, गो. सी. गावंडे महाविद्यालय उमरखेड, जि. यवतमाळ (महाराष्ट्र) पिन 445206

Scholarly Research Journal's* is licensed Based on a work at *www.srjis.com

वतन कि फिक्र कर जादॉ मुसीबत आनेवाली है।
तेरी बर्बादियॉ के म”ावरे है आसमानों में।
न समझोंगें तो मिट जाओंगे ऐ हिंदोस्तों वालों।
तुमारी दास्तॉ तक भी न होती दास्तानों में।

(इकबाल ने आजादी के समय आपसी मतभेद मिटाकर हौसला बुलंद करनेवाली कविता लिखी उसकी कुछ पंक्तियॉ)

iLrkouk

गांधीवाद एक जीवनप्रणाली है। गांधीवाद एक विचारधारा है। जिस आधारपर न्याय, स्वतंत्रता, समानता और बंधूता जैसे मूल्य समाज में वृद्धींगत करने के लिए उपयोगी सिद्ध होते है। गांधीयुग का प्रारंभ बीसवी सदी में हुआ। जिसने संपूर्ण वि”व को सत्य और अहिंसा की आधारपर जीवन जिने का रास्ता बताया और क्रांतिकारी भुमिका का निर्माण किया। उपोषण, सत्याग्रह, असहकार, आंदोलन और सविनय कायदेभंग जैसे साधनों की आधारपर स्वाधीनता पाने का मूलमंत्र दिया। इन्ही साधनों की आधारपर राष्ट्रीय आंदोलन का जन आंदोलन में रूपांतर कर दिया। 1919 से 1947 तक चलाये गयें जन आंदोलन की माध्यम से साम्राज्यवादी ब्रिटि”ा सत्ता को हिलाकर रख दिया। वर्णभेद का विरोध करने के लिए विदे”ा में आंदोलन चलाया। राष्ट्रीय एकात्मता के लिए गांधीजीने स्वराज्य की संकल्पना को महत्त्व दिया। गांधीजी लघु और कुटीर उद्योगोंको महत्त्व देकर भारतीयोंकों स्वावलंबी बनाना चाहते थें। म”ाीनों की जगह पर श्रम को महत्त्व देना चाहते थें और सरल जीवन पर वि”वास करते थें। स्त्रीयों की ि”ाक्षा के वे पक्षधर थें। वे रचनात्मक आद”ार्वादी थें। उनके स्वप्नों के भारत का प्रत्येक सदस्य धर्मनिरपेक्ष रहकर सत्य और अहिंसा के मार्गपर चल कर राष्ट्रीय एकता एवं अखंडता का महान दायित्त्व निभाने वाला था। वि”व”ाांती स्थापित करने के लिए युद्ध के बजाऍ मनुष्य के व्यक्तिगत और सामूहिक जीवन में संतूलन स्थापित करके किया जा सकता है ऐसा वे कहते थें।। गांधीजी के विचार आज भी वि”व के सभी युवाओं को प्रभावित करते है। उन्होने वीर पुरूषोंके अहिंसा का समर्थन किया जब की शक्तीहीन लोंगो की अहिंसा का समर्थन नही करते। आंतरराष्ट्रीय स्तर के यह महान व्यक्ती के विचार का समर्थन तिब्बत धार्मिक नेता दलाई लामा, दक्षिण आफ्रिका के नेल्सन

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

मंडेला और अमरिका के मार्टिन ल्युथर किंग इन्होने किया। वे गोहत्याबंदी एवंम मद्यपान के विरोध में थें। निः"ुल्क प्राथमिक ि"ाक्षा राज्यों का उद्दे"ा और कार्य होना चाहिए ऐसा गांधीजी मानते थें। उन्होने राजनीति का अध्यात्मिकरण किया। धर्म का लौकिकीकरण किया। जो आज के युग में राष्ट्रीय एकिकरण के क्षेत्र में रामबाण सिद्ध होगा। गांधीजी का द"ान धर्म की सुदृढ नीवपर अवस्थित है। धर्म, सत्य तथा अहिंसा पर आधारित एक नैतिक जीवन पद्धती है। आद"ा नैतिकता और धर्म एक ही वस्तू के अनेक नाम है। राजनीति में पंचायत राज और अधिकारोंके विकेंद्रीकरण का वों समर्थन करते थें।

गांधीजी का गॉव के प्रति दृश्टिकोन –

गांधीजी वैचारिक प्रदुषणोंकों नियंत्रित करने का एकमात्र सरल और सहज मार्ग है। वर्तमान युग कि संसार में गांधीजीने बताएँ मानवी मुल्योंका छिपा रहस्य था। जिसमें मानवीय प्रेम, उदारता, सहिष्णूता और मानवी धर्म आदि गुण संम्मिलीत है। राजनीति में आज भी तथाकथित राजनीतिक दलोंने स्वार्थपूर्ण दृष्टिकोन को अपनाते हुएँ गांधीजीको झुठलाने का भरपूर प्रयास किया। लेकिन आज भी बहूत बडा समुदाय गांधीजीके विचारोंको शांतता और सुव्यवस्था स्थापीत करके विकास करने के लिए उपयोगी समझते है। गांधीजी का कहना था की भारत गावों का दे"ा है। इसके पुननिर्माण का आधार गॉव ही हो सकता है। औद्योगीकरण और शहरीकरण से भारत विकसन"ाील दे"ा कि पंक्तियॉ मे खडा हो सकता है। पर गॉवों कि उन्नती के बिना भारत कि उन्नती कि बात महज पानी में कागज कि नाव चलाने जैसा है। इसलिए महाराष्ट्र मे राष्ट्रीय रोजगार हमी योजना, रोजगार ग्यारंटी योजना, हर एक गॉव के हर हाथ को रोजगार देना और लघु तथा कुटिर उद्योंग चलाने प्रोत्साहित करना जरूरी है। गांधीजी कि ग्रामीण विकास कि परिकल्पना विद्यमान भारत का भविष्य थी। करोंडो हाथों ने उत्पादन करने से भूक मिटती, विषमता घटती, समस्योंसे झगडने के लिए पुरूषार्थ जगता, नई चेतना नया संघठन, नयी एकता दिखाई देती। आपसी विवाद समाप्त करने हेतु महात्मा गांधी तंटामुक्त अभियान जैसा कार्यक्रम सरकार द्वारा चलाया जा रहा है। महात्मा गांधीने राष्ट्रीय आंदोलन मे दिए विचारोंका योगदान साक्षात विचोरोंकी प्रयोग"ााला है। अस्तेय, ब्रम्हचर्य, अपरिग्रह और ई"वरनिष्ठा यह उनकी विचारोंकी चौकट थी। उनकी विचारोंमें धार्मिक सहिष्णूता कि पा"र्वभूमी थी। आत्मसंयम मानवी जीवन का मूल्य है। मानवी वर्तन को नियंत्रित रखना धर्म का मुलसुत्र है।

गांधीजी का राश्ट्रवाद –

भारतीय राष्ट्रवाद स्वास्थप्रद, धार्मिक और मानवतावादी है। गांधीजी का राष्ट्रवाद उदात्त था। उनकी राष्ट्रीयता संकिर्ण नही थी। उनके राष्ट्रवाद में दुसरे राष्ट्र के प्रति आदरभाव था। वे अवसरवादी नही थे। उन्होंने अनेक विषयोंपर सामान्योंके लिए अपने विचार प्रस्तुत किए। उनकी दे"ाभक्ती ^^o l/ko

dVEcde^^ के ग्राम संसार मे समाहीत होती है। वे सदैव विद्यार्थी जीवन जीते थे। अंग्रेजों कि गुलामगीरीसे छुटकारा पाकर स्वाधीनता प्राप्ती के लिए सत्याग्रह को सबसे बडे हथियार के रूप में प्रयोग किया । अपने जीवन मे प्राप्त ज्ञान और अनुभुती के माध्यमसे दे"ा में राष्ट्रीय एकात्मता स्थापित करने का प्रयास किया। वे एक रचनात्मक आद"ीवादी थे। उन्होने सत्य और अहिंसा का सफल प्रयास अपने जीवन मे किया । उन्होने अपने तत्वचिंतन से सामान्य मनुष्य में आत्मसम्मान कि आत्मगौरव कि भावना निर्माण करने का प्रयास किया। गांधीजीके अनुसार सत्याग्रही कष्ट सहन करने के लिए तथा बलिदान करने के लिए सदैव तैयार रहता है। गांधीजी ने सत्य और अहिंसा के हथियार से भारत माता की गुलामी बेडीया काट डाली।

vkn'kyu ifr Hkkouk;i &

गांधीजी राजनीतिक संघटन, पंचायत राज व्यवस्था के आधार पर करना चाहते थे। उनकी दृष्टीसे ^^vfgalk dk foKku^^ ही शुद्र लोकतंत्र की और ले जाता है। उनका कहना था की लोकतंत्र और हिंसा साथ – साथ नही चल सकते। अनैतिक सरकारी कानून को विनयपुर्वक भंग करना प्रत्येक सत्याग्रही का कर्तव्य है। गांधीजी के आंदोलन का महत्त्वपूर्ण हथियार lfou; dk;nHkx उन्होने थोरिको नामक महान व्यक्ती से लिया। टस्किन कि ओरसे **Unto this last & Crown of Wild Olive** श्रम प्रतिष्ठा यह संकल्पना का स्विकार किया। उदा. दक्षिण आफ्रिका, चंपारन, बारडोली, खेडा आदि दे"ाव्यापी सत्याग्रही आंदोलन, भारत छोडो आंदोलन यह मुलतः सविनय अवज्ञा आंदोलन थे। लोकतंत्र की स्थापना के लिए राजकिय सत्ता का विकेंद्रिकरण आव"यक मानते थे। शासन चलानेवाले जन प्रतिनिधी निर्वाचित होना जरुरी समजते थे। लेकिन कोईभी निर्वाचित प्रतिनीधी समोलोपलुप नही, त्यागी और कर्तव्य परायण होने की अपेक्षा रखते थे। टॉलस्टाय सें अराज्यवाद, अहिंसा और असहकार का स्विकार किया।

विचारों का आंतराश्ट्रीय महत्त्व –

यदि हम संकटकालीन दौरे से गुजर रहे है। तथा अपनी दे"ा की राजकीय व्यवस्थाको विकासकी दौर पर लाना है तो गांधीजीके विचार अधिक प्रासंगिक है। इसलिए आज संपुर्ण वि"व मे गांधी के विचारो को अपनाया जा रहा है। संयुक्त राष्ट्रसंघ भी महात्मा गांधी का जन्मदिन 2 आक्टूंबर को आंतरराष्ट्रीय अहिंसा दिवस घोषित कर उनके सिंद्धांतोके प्रति समुचे वि"व के अभिव्यक्त कर चुका है । द. आफ्रिका मै नेल्सन मंडेला द्वारा चले रंगभेद विरोधी आंदोलन की सफलता का राज गांधीजी के सिंद्धांतो की जीत बताया है। अमेरिका राष्ट्राध्यक्ष बराक ओबामा ने कुछ समय पहले कहा था कि महात्मा गांधीजी जीवन भर उनके लिए प्रेरणा स्त्रोत बने रहे है। मार्टिन ल्युथर किंग ने तो महात्मा गांधी को ^^bZlk elhg^^ से जोडा था। तिब्बत धार्मिक नेता दलाई लामा ने गांधीजी को अपना आद"ी माना है। मॅचेस्टर गार्डीयन कहते

थे कि, गांधीजी **A Saint Among Politicians & Politician Among Saints** है। बर्लिन मे छात्रों कि मांग पर एक विद्यालय का नाम बदलकर गांधीजी के नाम पर रखा गया है। आपातकाल के दौरान पाकिस्तान ने जब टि. व्ही. चैनलोंपर रोक लगी तब जीयो टिम के हमीद मीन ने आपातकाल को वापस लाने के लिए गांधीगीरी का सहारा लेकर सडकोंपर फूल लेकर इसका विरोध करने लगें। गांधीजी के लिए सर्च करते है तो 1.94 करोड रिझल्ट मिलते है। उनके विचारोंसे पूरी दुनिया अपनी अपनी समस्याओंका समाधान खोज रही है। ईमानदारी से अगर यह कहा जाए तो गांधीजी अभी जींदा है। यही वजह है कि आज गांधीवादी मूल्योंकी प्रासंगिकता जीवन में न अपनाने के कारण व्यावहारिकता के धरातल पर बेअसर होती जा रही है।

/kkfe.d fopkj &

खि"चन धर्मके **New Teastment** ग्रंथ का प्रभाव गांधीजी के विचारों पर था। आज वर्तमान कालिन राजनीति में धर्म कि नाम पर संकिर्ण संस्था अपनी ताना"ाही वृद्धींगत करने का प्रयास कर रही है। इस बढती धर्मांधता को रोखने के लिए गांधी के विचार आज भी समकालिन परिवे"ा में आत्याधिक आव"यकतानुरूप है। लेकिन यह भूल गए की भारत विविध जाती, धर्म, वं"ा और पंथोंका दे"ा है। विविधता में एकता हमारा ब्रीद है। इसलिए धर्म का पाखंड फैलाने का प्रयास करने वालों कि दास्यता से मुक्ती नही पाते तब तक हमारी मुक्ती का मार्ग प्र"ास्त नही हो सकता। यदि बहुतः"ा दे"ा विदे"ा में गांधीजी के विचारों कि व्यावहारिकता समझकर उनको मुख्यधारा में लाने कि महत्तम प्रयास कर रही है। वि"व में अपना प्रभाव स्थापित किए अनेक नेता उनके विचारोंकों आद"ा, प्रेरणास्त्रोत, समझ रहे है। सचमुख सुख, शांती और वि"व"ाांती का सपना देखना अनुचित नही होगा। परिणातः भारत इस निकट भविष्य में संपूर्ण वि"व में शांती का संदे"ा संप्रेषित कर एक महा"ाक्ती के रूप में उभर सकता है। नोबेल पुरस्कार देनेवाली नार्वे कि नोबेल समिती ने कहा कि भगवान गौतम बुद्ध और ईसा मसीह के बाद वि"व"ाांती के लिए सबसे बडा योगदान देनेवाले महात्मा गांधी को नोबेल शांती पुरस्कार नही दिया गया। जिसके बारे में नोबेल समिती को इस तरह प"चाताप है।

efgykvk fd rRdkfyu fLFkrh vkj vknkyu i.fr ;kxnku &

प्राचीन समय में पुरूषों के साथ महिलाओं को कम दर्जा दिया जाने लगा। भारत ने भी पुरूष प्रधान संस्कृती को अपनाते हुऍ स्त्री–पुरूष भेदाभेद होने लगा। समाज में महिलाओंको बचपन से ही यह सिखाया जाता है कि वह दासी है। पुरूष कि सेवा करना उसका धर्म है। लेकिन गांधीजी के विचाार इससे भिन्न थें। वो नारी को भोग वस्तू या गुडीयॉ मानने को इन्कार करते है। गांधीजी के सामने नारी परंपरागत भारतीय परिवे"ा में शक्ती"ाली देवीतुल्य थी। "िाक्षा को वो नारी स"ाक्तीकरण का सबसे सफल हथियार मानते थें।

उनकी सोच से सत्य, अहिंसा, त्याग परिश्रम सहन"ीलन और करूणा आदि गुणों के कारण नारी, पुरूष से भी अधिक महिमामयी सिद्ध होती है। गांधीजी के विचारो से प्रेरणा लेकर डॉ उषा मेहता, मोराणलिनी देसाई, सुचेता कृपलानी, इंदिरा गांधी, ॲनी बेझंट, सावित्रीबाई फुले और पॅडम भिकाई कामा इन्हाने अपने कार्य"ाक्ती का परिचय दिया। गांधीजी ने लिखा कि, नारी को अबला कहना अधर्म और महापाप है। महिला का अर्थ होता है, महान और ताकतवाली। महात्मा गांधी ने स्त्री शिक्षा को स्त्री मुक्ती का प्रबल साधन माना। सदियों से चली आयी कुप्रथा, देवदासी प्रथा समाज मे कलंक है। 1931 मे कॉग्रेस कि कराची अधिवे"ान के दौरान महिलाओं को पुरूषों के बराबर संवैधानिक अधिकार देने कि बात कही तो किसने विरोध नही किया। इससे यह बात स्पष्ट होती है कि, गांधीजी ने महिला उत्थान के प्रति गहिरायी से कार्य किया। गुलामी कि जंजीरों को तोडने के लिए अंग्रेजो से बगावत करने वाली वीरांगणाओंनें इतिहास रचा है। समय समय पर हुएँ विद्रोहों में भारतीय नारीयों ने अग्रणी भूमिका निभाई। सर हयुज रोज ने स्त्रीयों के बारे में कहा कि यदि हिंदूस्तान कि एक फिसदी नारीयॉ आजादी कि दिवाणी हो गई तो हम सब को यह दे"ा छोडकर, हाथ झाडकर भागना पडेगा। स्त्रीयों को राष्ट्रीय कार्य के लिए संघटित करने हेतू महात्मा गांधी ने **''राश्ट्रीय स्त्री सभा''** की स्थापना किई। जिससे स्वदे"ाी आंदोलन को बढावा देना आसान हो गया। राष्ट्रीय कार्यो की जिम्मेदारी महिला को सौपने हेतू उन्हे घरके अकेलेपन से चार दिवारों से बाहर निकाल के महिलाओं को मोर्चे–जुलुसों मे शामिल करना, उनमें दे"ाभक्ती कि भावना जागृत करनाा , उनका मनोबल बढाना उन्हे आत्मनिर्भर बनाना और कानुन तोडने एवं जेल में जाने के लिए गांधीजी ने तैयार किया। आज की स्त्री सौ वर्ष पहिले के मुकाबले बौद्धिक तथा आर्थिक दृष्ट से ज्यादा स"ाक्त है। गांधी ने महिलायों को बन्दिनी से विद्रोहीनी बनाया। महिला और पुरूषों के भेदभाव नष्ट करके महिला के पुरूषों की आजादी महसुस करनी चाहिएँ। गांधीजीने अध्ययन और ि"ाक्षा से महिला स"ाक्तीकरण की आधूनिक परिभाषा प्रस्तुत की।

गांधीजी के भौक्षणिक विचार –

हिंदी स्वराज्य के अध्याय 18 में गांधीजी ने ि"ाक्षा के अर्थ को बेहतरीन तरीकेसे समजायॉ है। वे कहते है कि, अक्षर, ज्ञान एक साधन मात्र है, लक्ष्य नही। नैतिक मुल्यों के अभाव से दे"ा का लाभ कम और हानी ज्यादी हुई है।उस ज्ञान का अपने परिवार, समाज, राष्ट्र के उद्धार और विकास के लिए कैसा प्रयोग करना है यही सही ि"ाक्षा है। तत्कालिन समय में गांधीजीने जीन बुराईयॉ को ि"ाक्षा के क्षेत्र मे देखा वो नष्ट करने हेतू अपने मौलिक विचार अभिव्यक्त किएँ। गांधी ने 1908 मे टालस्टाय की ि"ाक्षा नीति को अपनाकर अनेक प्रयोग कियें, सिद्धांत बनायें। अंग्रेजी ि"ाक्षा ने राष्ट्र कि आत्मा को ही नष्ट किया है। इससे युवा पीढी में हीनता कि भावना बढ रही है। स्पर्धात्क युग में अंग्रेजी भाषा महत्त्वपूर्ण है। किन्तु इसका अतिरेक करके

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

आधुनिकता कि नाम पर बुजुर्ग व्यक्ती, शास्त्र, उत्सव और परिवार कि धज्जीयॉ उडाने लगे। मॉ–बाप, गुरूजनों के प्रति आदरभाव समाप्त होने लगा।संपूर्ण समाज पर पा"चात्य संस्कृती हावी होने लगी। शराब पीना, धुम्रपान करना, कम कपडे पहनने जैसे आदत को फॅ"ान का रूप दिया। वृद्ध माता–पिता कों वृद्धाश्रम भेजने लगे। आधुनिक (अंग्रेजी) f"k्षा से समाज मे दंभ, राग, जूल्म आदि प्रवृत्तीयॉ बढने लगी। गांधीजी पाठयपुस्तको द्वारा दिए जानेवाले f"k्षा के तुलना में मौखिक और वस्तुनिष्ठ f"k्षापर अधिक बल देते थे।

Xkka/kh fopkjkas dh 0;kogkfjdrk &

राज्य आम जनता के भलाई का साधन है। लेकिन एकमेव साधन नही। आज संपूर्ण वि"व परमाणू हथियार की भयानकता से लपेटा हुआ है। जागतिक आतंकवाद, हिंसाचार, गुन्हेगारीकरण और भ्रष्टाचार, बडे पैमाने पर बढा है। विज्ञान की उॅचाई बढी। वैf"वकरण की युग में जागतिकीकरण, खाजगीकरण और उदारमतवादीकरण हो गया। लेकिन मुल्योंका दुर–दुर तक संबंध नही। कुटुंब पद्धती का मूल ढॉचा अस्थिर हो गया। ''कौटुंबिक संस्कार'' नाम का मूल्य नाम"ोष हो गया। इस दृष्टिसे गांधी विचारों की आव"यकता है। गांधीवाद से मिले हुऍ संसाधनही समाज और राज्यों का मूलआधार है। वही आम आदमी के स्वभाव का स्थायीभाव है। इसीतरह प्रस्तुत शोध निबंध मे दिये गये महात्मा गांधी के मौलिक और चिंतन"ाीर महत्त्वपूर्ण दृष्टिकोन उजागर करना इस शोध निबंध का मुख्य हेतु है। जिसमें संपूर्ण वि"व का सार्वत्रिक विकास प्रतिबिंबित होता है।

lanHkZ lwph &

कौर सुरजीत, जौली संपादिका, गांधी एक अध्ययन, कंसेप्ट पब्लिके"ान नई दिल्ली, 2007.
लक्ष्मणसिंघ, आधुनिक भारतीय राजनीतिक एवं सामाजिक विचार, कॉलेज बुक डेपो जयपूर, 1970–71.
महात्मा गांधी, हिंदी नवजीवन, 10 अप्रेल 1930.
पुरोहित बी. आर., प्रातिनिधिक राजकीय विचारक एवं विचारधाराए, मध्यप्रदे"ा हिंदी ग्रंथ अकादमी भोपाल.
शीला (संपा.), विनोबा–''स्त्री शक्ती जागरण, पद्मधाम प्रका"ान पवनार.
सिंह मनोजकुमार, कुमार आ"ुतोष, महात्मा गांधी एक अवलोकन, के. के. पब्लिके"ान नई दिल्ली.
कृपलानी सुचेना, नारियों के नेता और f"k्षक, साहित्य प्रका"ान वाराणसी, 1969.
जैन य"ापाल, अहिंसा का अमोघ अस्त्र, सस्ता प्रका"ान, नई दिल्ली, 2007.
तडकलकर नंदिनी, महिलांचे सबलीकरण आणि शेतकरी महिला आघाडीचे योगदान, अल्फा पब्लिके"ान नांदेड 2008.
जैन मानक, गांधी के विचारों की 21 वें सदी में प्रासंगिकता अदि पब्लिके"ान, जयपूर, 2010.
आचार्य राममूर्ती, f"k्षा–संस्कृती और समाज, श्रम भारती बिहार, 1990.
ले. प्यारेलाल (अनु.), ब्रिजमोहन हेडा–सत्याग्रहाच्या उंबरठयावर, 2005.
डॉ. अरूण कुमार श्रीवास्तव, भारत में पंचायती राज.